नयी कहानी धारा के आलोक पुंज-अमरकांत

ममता विरसंग भाई चौधरी

एम.ए.एम.एड |

आजादी के बाद उभरनेवाले नयी कहानी के आंदोलनों में राजेन्द्र यादव,मोहन राकेश,कमलेश्वर जैसे कई कर्मठ कहानीकारों का परिचय हुआ है | अमरकांत भी एक ऐसा ही नाम जिन्होंने हिन्दी कहानी साहित्य को एक नया अंजाम दिया है | प्रेमचंद की छत्रछाया के निचे अपनी साहित्यिक कुटिया बनानेवाले अमरकांत एक सिद्धहस्त साहित्यकार थे | कहने में कोई अतिश्योक्ति न होगी की हिन्दी साहित्य में कालजयी कथाकार के रूप में उनकी अपनी अनूठी पहेचान रही है | १९२४ में उतरप्रदेश के बलिया जिल्ले के नगारा नामक गाँव में जन्म लेनेवाले अमरकांत ने विकट परिस्थितियों के साथ लोहा लेते हुए जिन्दगी की महक प्राप्त की थी | जिन्दगी और जोंक,मौत का नगर ,कुहासा,तूफान,देश के लोग ,प्रतिनिधि कहानियाँ,आदि जैसे कहानीसंग्रहों में उनकी कहानियाँ संग्रहीत है | सुखा पता,लहरें,बिच की दीवार,ग्राम सेविका,जैसे मूल्यवान उपन्यास भी उन्होंने लिखे है |

विखंडित होते जीवनमूल्यों और समाजव्यवस्था का शिकार बनते उसूलों-आदर्शो के टूटने का दर्द,बेबसी और बैचेनी के साथ ही अडिग रहनेवाली आस्था को बनाये रखना और बेहतर विकल्प की तलाश अमरकांत ने की है | उनका लेखन समय हिन्दी कहानी साहित्य के बदलते समय का गवाह है | इसी संदर्भ में रविन्द्र कालिया ने सार्थक लिखा है कि-

“अमरकांत इलाहाबाद के ऐसे साहित्यिक चिराग थे,जिनकी रौशनी पंत,महादेवी,निराला व फ़िराक गोरखपुरी से कम न थी | मित्र प्रकाशन में काम करते समय मेरी उनसे रोज मुलाकात होती थी | रानी मंडी स्थित मेरा धर अमरकांत के साथ साहित्यिक अड्डा बन गया था |”

अमरकांत की कहानियों की मूल भावभूमि मध्यवर्गीय समाज जीवन है | उन्होंने प्रेमचंद की राह पर चलते हुए ग्रामीण समाज को अपनाया है | उन्होंने अपनी कहानियों में कस्बाई परिवार की विविध समस्याओ,आकांक्षाओ,सम्बन्धो या क्रियाकलापों का बहुत ही जीवंत चित्रण किया है | उनकी ‘दिपटी कलेक्ट्री’ कहानी एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की बनती-बिगडती,टूटती आकांक्षाओ की मर्मकथा है | जिन्दगी और जोंक कहानी रजुआ जैसे अनाथ लडके की नारकीय जिन्दगी और फिर भी जिन्दगी के प्रति मोह की कथा है |

© IACRP

कहानीकार ने 'मूस' कहानी में भी मूस नामक पात्र के माध्यम से अपने उदेश्य की पूर्ति की है | अपनी बाल्यावस्था में ही माँ की छत्रछाया गवाह देनेवाले मूस की जिन्दगी कष्टदायक बनती है | यथा:

"दुबला-पतला शरीर ,छोटा चहेरा,बड़ी-बड़ी फरफरी मुछे,छोटी-छोटी मिचमिचाती आँखे और उभरी हुई गाल की हडियाँ | पांच साल पहले उसने चालीस पार कर लिया था | उसके हाथों तथा पैरों में सिकुड़े हुए केचुए की तरह मोटी-मोटी नसे उभर आई थी |"१

अमरकांत की 'दोपहर का भोजन' एक बहुचर्चित कहानी है , जिसमें कहानीकार ने अभावग्रस्त मध्यवर्गीय परिवार की भूख और विवशता का अंकन किया है | उनकी कई कहानियों में सामाजिक बदियों का भी निरूपण हुआ है | उनके द्वारा लिखित आना और जाना ,बौराइया को दो ,गगन बिहारी,छिपकली आदि जैसी कहानियों में समाज में फैले अन्धविश्वास,बाह्याडम्बर ,भाग्यवाद,अवसरवाद पर वैधक वाणी में व्यंग्य किया है |

अमरकांत की 'कुहासा'कहानी एक महत्वपूर्ण कहानी है,जिसमें प्रतीकात्मक शैली में गरीबी,अभावग्रस्तता ,मजबूरी का चित्रण हुआ है | गले की जंजीर, नौकर कहानी में लेखक ने नौकरों की होनेवाली परेशानिया समस्याओं के प्रति हमारा ध्यान आकृष्ट किया है | इस प्रकार अमरकांत की कहानियों में जमीनी सच्चाई की गूंज विद्यमान है | डॉ.बच्चनसिंह का मानना है-

"स्मरण रखना चाहिए कि परम्परा परिस्थितियों के अनुसार एक सिमटकर बदल जाती है | अमरकांत ही की कहानियों को ले जिनमें प्रेमचंद के गाँव मिलेंगे जो पहले से अधिक गरीब और विपन्न हो गये है,मध्यवर्ग की कमजोरियाँ एक-दुसरे स्तर पर दिखाई देगी | अधिकांश मध्यवर्ग के अशिक्षित होने के कारण दिपटी कलेक्ट्री एक सपना था "२

उनके द्वारा लिखित दुर्धटना,श्वानगाथा ,धर,सच्चाईयां जैसी कहानियों में समाज में बनते-बिगड़ते रिश्ते और खोखलेपन का चित्रण हुआ है | केवल कल्पना की ऊँची उड़ाने नही बल्कि ग्रामीण यथार्थ उनकी कहानियों का वैशिष्ठ्य है | कहने में कोई दो राय न होगी कि उनकी कहानियों में तडक-भडक ,चमत्कार,अश्लीलता,चटखोर शोर नहीं है ,अपितु यथार्थ है |यथा:

" अमरकांत जीवनभर यथार्थवादी,प्रगतिशील विचारों और रचनाओं के प्रतिनिधि स्वर रहे अपितु उन्होंने कभी भी किसी पार्टी की प्रतिबध्दता को पटे की तरह गले में नहीं पहना |"३

मैत्री जैसी कहानियाँ आधुनिक नवयुवकों की कमजोरियों का पर्दाफाश करती हुई हमें कहती है कि फैशन और व्यसनों में मदमस्त रहनेवाले आज के युवक किस हद तक खोखले हो चुके है | उनके द्वारा लिखित लडकी की शादी,जन्मकुंडली,दुर्धटना आदि कहानियाँ सुविधा भोगी वर्ग की अवसरवादिता,उनके द्वारा निम्न वर्ग की धूर्तता पूर्ण शोषण की मक्कारी पर व्यंग्य करती है |

अमरकांत ने समाज में युगों से शोषित व् पीड़ित नारी की त्रासद स्थितियों को भी उजागर किया है | इस द्रष्टि से उनकी हत्यारे कहानी मिल का पत्थर है | इस कहानी में प्रयुक्त एक मजदूर नारी खून-पसीना एक करके भी अपना गुजारा करने में नाकामयाब रहती है | परिणाम स्वरूप वह अपना जिस्म बेचने के लिए मजबूर बनती है | दोपहर का भोजन की सिध्धेश्वरी भी अपने परिवार के लिए टूट जाती है |विजेता कहानी की नीलम के प्रति व्यवस्था की भोगवादी द्रष्टि और पुरुष समाज द्वारा नारी की व्यक्तिगत सम्पति समजे जाने की मानसिकता व्यक्त हुई है | 'लड़का-लडकी' कहानी भी इसी उदेश्य की पुती करती है | आर्थिक कठिनाईयों के बावजूद भी एक लडकी की कष्टदायक जिन्दगी का चित्रण यहा मिलता है |

" उसको छाती फाडकर काम करने पड़ते,बच्चों को सम्भालना पड़ता और छोटे भाई को गोद में लेना पड़ता | ४

इस प्रकार अमरकांत की कहानियों में शुभ चिंता की सीता हो या लडकी और आदमी की कमला,मूस की मुनरी हो या असमर्थ हिलता हाथ की मीणा ये सभी नारी पात्र व्यहारिक ,कर्मठ और इमानदार है | नि:संदेह ग्रामीण समाज के एक जागरूक कहानीकार थे | डॉ.क्षमाशंकर पाण्डेय का मानना है-

" अमरकांत हिन्दी साहित्य के अमर दीपक है | उनके द्वारा किया गया साहित्यिक अवदान हिन्दी साहित्य में अविस्मर्णीय रहेगा | उनकी रचनाधर्मिता सभी पाठकों को हमेंशा अभिसिंचित करती रहेगी |"

© IACRP

संदर्भ ग्रंथ;-

(१) अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-१ -अमरकांत-पृष्ठ- १७६

(२) हिन्दी साहित्य का दूसरा ईतिहास-डॉ.बच्चनसिंह- पृष्ठ- ४९१

(३) आजकल-संपा- फरहत परवीन- पृष्ठ- १०

(४) मित्र-मिल तथा अन्य कहानियाँ-अमरकांत- पृष्ठ- १२

© IACRP